NH Debate - 27

सतयुग-कलयुग और औरत

(cross department love affairs के पंचायतियों का युग)

जब सति सीता की दोबारा अग्नि-परीक्षा की बात उठी थी तब प्रजा दो गुटों में बंट गयी थी, एक पक्ष अग्निपरीक्षा को अन्याय बता रहा था तो दूसरा पक्ष इसे सही बता रहा था। महर्षि बाल्मिकी के द्वारा clean-chit दिए जाने के बावजूद भी वो सति सीता की पवित्रता पर संदेह करते रहे।

वैसे तो आज के युग को कलयुग कहा जाता है और औरत की अग्नि-परीक्षा तो खैर नहीं ली जाती लेकिन औरत की हालत मिलीजुली आज भी सतयुग जैसी ही है। जहां सतयुग में नारी को 100 प्रतिशत सिर्फ पुरुष को ही समर्पित बताया गया है वहीं आज कलयुग में कम से कम लिंग समानता की बातें तो होने लगी हैं| परन्तु सति सीता की अग्नि परीक्षा को सही ठहराने वाला वर्ग आज भी कहीं-ना-कहीं जिन्दा है।

कुछ भी हो एक बात तो तय है कि भले ही सतयुग कितना ही सालीन-कुलीन-सुशील-शील बताया जाता रहा है परन्तु औरत के लिए था वो आज से भी बड़ा कलयुग। हाँ वो सतयुग रहा होगा, लेकिन सिर्फ पुरुषों के लिए| फिर भी पता नहीं क्यों लोग आज भी सतयुग की ही गवाही देते हैं कि तब यह था, वह था, राम राज्य था और आज भी वैसा ही हो।

सुना है संसार में मर्द के बीच झगड़े की तीन वजहें होती आई - जर(धन)-जोरू और जमीन और ऐसे ही एक औरत के लिए भी झगड़े की तीन ही चीजें रही - जर-जोर(मर्द) और जमीन। लेकिन इन तीनों पैमानों को दोनों युगों में रख के तोलें तो सर्वथा यही चलन चला आ रहा है। बस सतयुग से कलयुग में एक फर्क जरूर आया है कि औरत को बराबरी के अधिकार मिलने लगे हैं जो कि सतयुग में द्वितीय दर्जे के ही होते थे|

हाँ, औरत के लिए मर्दों में लड़ाई आज के दिन कुछ ज्यादा बढ़ गई है। लड़के school-colleges में प्रवेश करते ही लड़कियों पे ऐसे पासे फेंकते हैं कि ऐसे तो कभी शकुनि ने भी कौरवों को द्रोपदी दिलाने हेतु नहीं फेंके होंगे| कभी-कभी तो ऐसा competition देखने को मिलता है कि प्रतीत सा होने लगता है कि जैसे लड़के स्कूल-कोलेजों में पढने नहीं सिर्फ लड़कियां बिसाहने ही आते हों। और इसमें

क्या किसी गाँव के सरकारी स्कूल, क्या शहरों के public और convent स्कूल से ले क्या कोलेज और क्या यूनिवर्सिटी।

इस क्षेत्र में इतना कम्पटीशन है कि इतना तो सौतन का सोत से नहीं होता| management-medical और engineering कालेजों में तो लड़कियों को departmental property समझा जाता है, क्या मजाल जो इस डिपार्टमेंट की लकड़ी उस डिपार्टमेंट के लड़के को पट जाए। और अगर ऐसा हो जाए तो लड़की वाले डिपार्टमेंट के लड़के ऐसी पंचायतें बैठाते हैं जैसी तो इन मामलों में बदनाम कर दी गई खाप पंचायतें भी नहीं बैठाती| और फिर फरमान होते हैं उस लड़की से बात ना करने के, उसके साथ इंटरेक्शन बंद कर देने के बिलकुल किसी पंचायत के हुक्का-पानी बंद कर देने के फरमान जैसे। शुक्र है मैंने मैनेजमेंट कोलेज में कदम रखे और खुद ये किस्से मेरे सामने होते देखे अन्यथा पता नहीं लोग (या ये स्वंय भी स्वयं को) इन कोलेजों में पढने वालों को कोनसे देवदूत का छदम अंश समझते हैं कि जैसे सारी आधुनिकता और खुलापन बस इन्हीं से शुरू होता हो और इन्हीं पे ख़त्म|

और “जिसकी लाठी उसकी भैंस” वाला सदियों पुराना पंचायतों और राजाओं का rule यहाँ भी rule करता है क्योंकि ये cross-department love affairs पे चौपालें भी उन्हीं पे बैठती हैं जहां लड़का या लड़की कमजोर हों। उदहारणत: अगर आप दिल्ली के किसी कोलेज में पढ़ रहे हैं और हरियाणा से कोई भी ताल्लुक रखते हैं तो वैसे तो आपसे बिना आपकी जाति पूछे ही मान लिया जायेगा कि अगर आप हरियाणा से हैं तो जरूर जाट होंगे और जाट नहीं भी होंगे तो कोलेजों के ‘यंगिस्तान’ में हरियाणा का इतना सिक्का चलता है कि ये क्रोस-डिपार्टमेंट के पंचायती आपपे पंचायत नहीं बैठाएंगे। वो बैठाएंगे तो किसी बेचारे बंगाली के लव पे या आसामी के लव पे। ऐसे ही चंडीगढ़ के किस्से हैं वहाँ यही सिक्का पंजाबी और हरयाणवी होने के नाम पे चलता है। और ऐसे ही भारत के किसी भी कोने के किस्से उठा लीजिये, हर जगह यही कहानी है। और ताज्जुब की बात तो ये है कि ये पंचायते किसी रूढ़िवादी पंचायतों या खाप-पंचायतों के चौधरियों द्वारा नहीं बैठाई जाती, बाकायदा भविष्य के manager, doctor से ले engineer लोग बिठाते हैं|

काश ये मीडिया वाले और तथाकथित समाजशास्त्री इंसान की विरोधी लिंग पर यह अधिपत्य जमाने की प्रवृति को समझ पाते। यह अधिपत्य के नाम पर संगठन बनाने को समझ पाते। आखिर बदला ही क्या? जो काम गली-मुहल्लों में पंचायती-समाजी लोग करते हैं वहीँ कोलेज-यूनिवर्सिटी में ये क्रोस-डिपार्टमेंट के लव के ठेकेदार करते हैं| ये निर्धारित करते हैं कि कोनसी लड़की या लड़की किस लड़के या लड़की को पटेगी|

महात्मा गाँधी तक भी ताउम्र रामराज्य के ढोल पीटते रहे| रामराज्य में चाहे लाख अच्छाईयाँ रही हों, परन्तु औरत की स्वायत्ता के नाम पर तो कलयुग फिर भी बेहतर ही कहा जा सकता है। शायद हम लोग कलयुग में भी सतयुग के रामराज्य के स्वप्न देखते हैं इसीलिए औरतों के प्रति सतयुग वाला नजरिया नहीं बदल पा रहे। हम औरत को आज भी सतयुग की तरह बलिदानी ही देखना चाहते हैं, उसको देवी तभी कहना चाहते हैं जब वो बलिदानों की मूर्ती बने।

मुझे लगता है कि अगर हमें समाज में औरत की दशा को सुधारना है तो सबसे पहले ये रामराज्य के राग अलापने बंद करवाने होंगे। क्योंकि रामराज्य और लिंग-समानता एक साथ नहीं चल सकते। कोई माने या ना माने लेकिन रामराज्य लिंगभेद के मामले में असमानता का चरमोत्कर्ष रहा है।

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

Dated: 24/10/2013